IF : 4.547 | IC Value 80.26

VOLUME-6, ISSUE-5, MAY-2017 • ISSN No 2277 - 8160

Original Research Paper

Hindi

नासिरा शर्मा के उपन्यास 'अक्षयवट' में आर्थिक समस्याएँ

पूनम

हिन्दी विभाग गाँव – झोझु खुर्द, जिला – भिवानी (127310)

मनुष्य जन्म से ही कुछ ऐसी मूलभूत आवश्यकताएँ एवं प्रवृतियाँ लेकर आता है, जिनकी संतुष्टि के लिए उसे आर्थिक सन्दर्भ में प्रवेश करना पड़ता है। धर्म, दर्शन, कला, विज्ञान, साहित्य आदि क्षेत्र मानव संस्कृति के इतिहास में उत्तरोत्तर महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करते हैं, लेकिन इन सबकी आधारशिला मनुष्य की आर्थिक स्थिति ही है। 'अर्थ' को परिभाषित करते हुए 'शब्द–सागर' में लिखा गया है – ''अर्थशास्त्र के अनुसार मित्र, पशु, भूमि, धन आदि की प्राप्ति और वृद्धि सब धन अर्थात् 'अर्थ' कहलाते हैं।''[1]

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि जो द्रव्य मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए काम आता है यथा – रूपया, पैसा, भवन, धातुएँ, पशु, अन्य अनेक प्रकार की संपत्ति वह सभी अर्थ कहलाती है। वस्तुतः अर्थ मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में बहुत ही आवश्यक व महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय दर्शन के अनुसार अर्थ को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है। भारतीय दर्शन के अनुसार मानव जीवन के चार पुरूषार्थों में अर्थ भी एक है, लेकिन भारतीय चिंतकों ने चारों पुरुषार्थों यथा काम, मोक्ष, धर्म व अर्थ में 'अर्थ को कभी सर्वोपरि दर्जा नहीं दिया है। अर्थ जीवन में महत्त्वपूर्ण होते हुए भी साधन ही है साध्य नहीं। भारतीय अर्थव्यवस्था में उचित माध्यम एवं परिश्रम से कमाए गए धन को ही महत्त्व दिया गया है। अनुचित या अनैतिक तरीकों से कमाए गए धन या कमाने वाले को समाज में हय दृष्टि से देखा जाता है। वर्तमान समाज को अर्थ के आधार पर ही कई वर्गों में विभाजित किया गया है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परिवार को उच्चवर्गीय परिवार के अन्तर्गत रखा जाता है। आर्थिक दृष्टि से मध्यम स्थिति के परिवार, मध्यवर्गीय तथा निम्न स्थिति के परिवार जो अपना भोजन सुगमता से नहीं जुटा सकते, निम्नवर्गीय परिवार कहलाते हैं। निश्चित रूप से धन के दृष्टिकोण से समाज को तीन वर्गों में बाँटा गया है। समाज का उच्चवर्ग प्रायः मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग का शोषण करता है तथा मध्यवर्ग निम्नवर्ग का। इस प्रकार शोषण की इस प्रक्रिया के फलस्वरूप शोषितों के सम्मुख और भी कई समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। अर्थ ने आज समाज के व्यक्तियों में भेदभाव की दृष्टि पैदा कर दी है तथा समाज को छिन्न–भिन्न कर दिया है। नासिरा जी ने अपने उपन्यास में तत्कालीन अर्थव्यवस्था पर प्रकाश डाला है। नासिरा जी के उपन्यास में अंकित अर्थ व्यवस्था के अन्तर्गत महंगाई की समस्या, बेरोजगारी, गरीबी तथा व्यवसाय से संबंधित समस्याओं का चित्रण बखूबी रूप से हुआ है।

महंगाई की समस्या

बढ़ती हुई महंगाई से आज प्रत्येक व्यक्ति चिन्तित रहता है जिस गति से वस्तुओं की कीमत बढ़ने से महंगाई बढ़ी है, उस गति से वेतन में वृद्धि नहीं हुई है। किसी न किसी वस्तु पर सरकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नित नये कर लगाती रहती है। जिससे महंगाई और अधिक बढ़ती है। आय में वृद्धि न होने के कारण आज का साधारण व्यक्ति वर्तमान महंगाई से बहुत पीड़ित है। उसे रोटी के दो कोर निगलने की अपेक्षा आँसूओं के घूंट पीने पड़ते हैं। नासिरा शर्मा ने 'अक्षयवट' उपन्यास में इसी दिन–प्रतिदिन बढ़ती महंगाई को उजागर किया है। जिसमें जहीर के परिवार को इस बढ़ती महंगाई के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जहीर की माँ व दादी को लग रहा था कि अब उनके कन्धे थक रहे हैं। घर के खर्च में कटौती तक करती। अब उनकी सारी उम्मीदें आकर जहीर पर टिक गई थी। अब यही समस्या उनके सामने थी कि आखिर क्या किया जाए। दिन–ब–दिन बढ़ती हुई महंगाई को देखते हुए अब तो जहीर की पढ़ाई में भी परेशानी आ सकती है... सिपतुन ने ऐसा सोचते हुए जैसे तैसे सिलाई–कटाई करके चालीस पचास हजार जमा कर लिया था। जिससे सिपतुन को इत्मीनान था कि जहीर की आगे की पढ़ाई के लिए उसके पास इतनी जमा पूंजी है कि वह आराम से एमब्एब् कर सकता है। बहुत दौड़ भाग और बहुत सी राहों के बीच खड़ा जहीर भी बौखला गया। कहीं सीटें कम थी तो कहीं उसका अपना प्रतिशत कम था। जहीर को अपने अंग्रेजी की टीचर की मदद से टैगोर टाउन में तीसरी और दूसरी कक्षा में बच्चों के ट्यूशन मिल गए। फिरोजजहाँ ने मना भी किया मगर सिपतुन ने यह कहकर लाजबाब कर दिया – ''अम्मीजान! करने दीजिए ट्यूशन। जेब खर्च भी निकाल लेगा तथा खुद इसका भी फायदा होगा। आखिर पढ़ाने के लिए भी तो पढ़ना व समझना पड़ेगा।''[2] सिपतुन की तबीयत खराब होने पर भी घर खर्च की चिंता के कारण वह डॉक्टर के पास जाने को भी तैयार नहीं थी। किसी बहाने से दवा लेने से भी इन्कार कर देती थी।

दूसरी तरफ मुनिया का परिवार था जो बढ़ती हुई महंगाई का शिकार हो चुका था। आमदनी का कोई साधन न था। घर की स्थिति को लेकर माँ और पिता की परेशानी को देखकर मुनिया ने काम करने की ठानी। पन्द्रह सोलह साल की वह बच्ची मालिन के मना करने पर भी काम करने के लिए अपनी हठ पर अड़ी रही। जिसका उसे शिकार होना पड़ा। साल भर तक खूब अच्छा चलता रहा। पैसा घर आया तो स्थिति भी सुधरी। मुनिया को थोड़ी स्वतन्त्रता भी मिल गई और यही स्वतन्त्रता उसकी जान ले बैठी। इस प्रकार नासिरा जी ने अपने उपन्यास में इस महंगाई के कारण होने वाली समस्याओं को उजागर किया है। जिससे जहीर और मुनिया का परिवार इन समस्याओं का शिकार होता है और मुनिया को तो अपनी जान से ही हाथ धोना पड़ता है।

गरीबी की समस्या

व्यक्ति जब पर्याप्त भोजन और जीवन की अन्य आवश्यकताओं को संतुष्ट करने में समर्थ नहीं होता, उस समय वह गरीबी की समस्या से जूझता रहता है। भारतीय समाज में अर्थ को अधिक महता मिल गई। धन को इतनी प्रमुखता देने के कारण ही समाज में गरीबी फैलती है। प्रत्येक व्यक्ति धन का लोभी हो जाता है। नासिरा शर्मा के उपन्यास 'अक्षयवट' में गरीबी की इसी समस्या को चित्रित किया गया है। जिसमें जहीर के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। घर में आमदनी नाम की कोई चीज नहीं थी। विरासत तो फिरदौस बेगम के जमाने से ही छिन्न चुकी थी। जमा किया हुआ रूपया धीरे–धीरे करके पानी के घड़े में छेद की तरह टपक–टपक कर खाली हो चुका था। फिरोजजहाँ घर की गरीबी को देखकर हर दिन परेशान रहती थी कि आज के बाद कल क्या होगा ? घर की आर्थिक स्थिति को देखते हुए उम्र न होने पर भी वह किसी स्कूल या कॉलेज में नौकरी करने की सोचती हुई रात दिन घोड़े दौड़ाती है कि इलाहाबाद में कौन–कौन से कॉलेज, स्कूलों में कौन पढ़ा रहा है। उधर सिपतुन भी गरीबी से निजात पाने के लिए सास की लग्न को देखकर सोचने लगी कि क्यों न मैं भी कुछ काम करूँ। पढ़ने–लिखने में तो उसकी ज्यादा चाहत न थी। सिलाई–पिरोई में उसका हाथ अच्छा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह अपना काम कहाँ से व कैसे शुरू करे। बाहर से आने वालों में या तो जमायारिन थी या फिर दूध वाला। एक दिन हिम्मत करके उसने घर की पुरानी जमादारिन चन्दा से कहा, 'यहाँ कोई दर्जी है आस–पास ? ''काहे नहीं, बड़े नीमे के पास जो नीले दरवाजा वाला घर है, वहीं बैठता है। कुछ सिलवाना हो तो भेज दूँ ?''[3] नहीं यूं ही पूछा... ''मैं तो खुद कपड़ा सिल लेती हूँ।''[4] एक दिन जमादारिन किसी और को साथ लेकर आई और सिपतुन से कहा, ''तुम कहे रही न... कपड़ा सिलवाने आई है।'' उस पहली औरत ने औरतों का तांता घर में लगा दिया। कुछ दिनों तक घर में सब कुछ ठीक से चला। घर की स्थिति में भी कुछ सुधार आया। परन्तु जमाना बदल रहा था। दर्जी फिल्में और डिजाइन की किताबों में डिजाइन देख देखकर जवान लड़कियों को रिझा रहे थे। सिपतुन के पास बस कुछ पुराने ग्राहक ही शेष बच गये थे। जिनको अपने जमाने के आरामदेह कपड़े पहनना पसंद था। फिरोजजहाँ भी रिटायर हो चुकी थी। इस प्रकार एक बार फिर से जहीर के परिवार पर गरीबी ने डेरा डाल दिया। सिपतुन के पास भी सिलाई का काम आना लगभग खत्म हो गया था। सिपतुन ने गोटदार रजाइयाँ बनानी शुरू कर दी। जिससे हफ्ते भर का खर्च निकाल लेती। जहीर के पढ़ाई से इन्कार करने पर दादी के समझाने पर उसने हाँ भी कर दी। लेकिन जहीर को सबसे बड़ा झटका तब लगा जब देश की राजनीति विश्वविद्यालय में घुस आई। विश्वविद्यालय के परिसर में दंगल छिड़ गया। विश्वविद्यालय में यह आफत व घर में मुसीबत का पहाड़ आन पड़ा। दादी की तबीयत अचानक खराब होने के कारण दादी के ऑपरेशन में दादी और सिपतुन की जमा पूंजी खत्म हो गई। इलाज के बाद फिरोजजहाँ बच जरूर गई लेकिन घर की हालत इतनी खस्ता हो गई थी कि उन्हें दूध और दवाओं के लाले पड़ गए थे। इस प्रकार नासिरा जी ने उपन्यास में दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही बेरोजगारी को ही गरीबी, का मुख्य कारण माना है।

व्यवसाय संबंधी समस्याएँ

समाज में व्यवसाय की समस्या एक ऐसी समस्या हैं, जिसके न मिलने पर व्यक्ति का समाज में रहना मुश्किल हो जाता है। समाज में नौकरी न मिलने पर, बढ़ती हुई महंगाई में मनुष्य अपने घर का खर्च भी बड़ी कठिनाई से चला पाता है और उसे नौकरी की तलाश में भटकना पड़ता है। नासिरा शर्मा के उपन्यास में भी इसी व्यवसाय संबंधी समस्या को उजागर किया है। जहीर का परिवार आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण तरह–तरह की कठिनाइयों से गुजर रहा था। जिससे जहीर के परिवार पर मुसीबतों का पहाड़ आन गिरा। दादी के इलाज में पैसों के खर्च होने से घर की स्थिति और भी बद–से–बदत्तर हो गई। इस दो तरफा मार से जहीर बुरी तरह टूट चुका था। नौकरी करना ही उसको अब हर परेशानी का हल लग रहा था। किन्तु जहीर उन लोगों के पास जाते झिझक रहा था जो उसको लेकर बड़े–बड़े ख्वाब देख रहे थे। घर की बदहाली ने एक दिन उसे उन्हीं लोगों के पास जाने के लिए मजबूर कर दिया। जहीर का मन भी अपनी बेबसी पर झुँझलाकर रह गया फिर वह उन जाने वालों के पास पहुँचा जो उसकी तालीम के मुताबिक नौकरी दिलवा सकते थे। वे भी उसका मजाक बनाकर कहकहा मारकर बोले, ''मियाँ, तुम्हारे लिए नौकरी हम ढूँढ़े ? अरे ड्राइवर, चपरासी के काबिल थोड़े हैं आप... जानते है किस घराने से हैं ?''[5] ''क्यों बाप दादा की नाक कटवाने पर तुले हैं ? आप और नौकरी करेंगे ? फिर वह क्लर्क कहाँ जाएगें हुजूर! कहीं अम्मा, दादी से झगड़ा तो नहीं कर लिए हैं वरना इतनी बड़ी हवेली के मालिक होकर आपको क्यों कर रूपयों की जरूरत पड़ गई।''[6] थका–हारा जहीर जब घर लौटता है तो सिपतुन को उसके उतरे चेहरे से पता चल जाता है कि वह नाकाम ही लौटा है। उसकी हिम्मत भी जवाब देने लगी थी। उसका दिल चाहता था कि भाइयों से कर्जा मांग ले, फिर दिमाग मना कर देता था। उधर फिरोजजहाँ को यह गम खाये जाता था कि जिसके लिए एक–एक कौड़ी जमा की उसके काम तो आई नहीं और वह मरने की उम्र में जीने की तमन्ना लिए बैठी है। जहीर के लिए दुनिया अंधेरी हो चुकी थी। उसका बस चलता तो वह जूता पॉलिश करने बैठ जाता। उसकी भूख तीन रोटी से एक रोटी रह गई थी। उसको माँ की पट्टी बंधी उगँलिया देखकर लगता था कि सूई ने उसका कलेजा छलनी कर दिया। आजकल उसने लोगों से मिलना–जुलना शुरू कर दिया था। यह सोचकर की तकदीर किसी से टकरा ही जाए। इस वक्त मुन्ने वकील के बूढ़े मुंशी जी चले आ रहे थे। उन्हें देखकर जहीर के मन में ख्याल गुजरा कि अब कितने दिन तक चलेगें ? क्यों न वकील साहब से मिला जाए। शायद उन्हें मेरी बात जच जाए। फिर उसको कुछ छोटे बच्चे जाते दिखे, ख्याल आया कि ट्यूशन करना भी क्या बुरा रहेगा ? जहीर इस सच्चाई को किसी तरह हजम नहीं कर पा रहा था कि एक दिन वह बिसाती बन जाएगा। उसको जब खरीदारी करने का सलीका नहीं आया तो बेचने का हुनर कहाँ से आएगा ? इस समय अन्धा क्या मांगे दो आंखे। काम तो कुछ न कुछ करना पड़ेगा। हार मानकर वह दुकान पर काम की सोचता है। दुकान का मालिक दुकान बेचना चाहता था। जहीर ने कहा कि घर में सलाह–मशविरा करके जवाब देगा। मुरली और जहीर के घर लौटने पर सिपतुन चौंक पड़ी तथा सोचने लगी कि ऐसे लड़के के साथ जहीर घर क्यों आया है ? जहीर ने माँ से विसातखाने की बात बताई। सिपतुन यह सुनकर चुप रह गई मगर फिरोजजहाँ अपने को न रोक सकी और बिलबिला कर बोली कि अब हमारे इतने बुरे दिन आ गए हैं कि, ''अब तुम यह काम करोगे।'' तब जहीर ने दादी को समझाते हुए कहा कि – ''तो क्या हुआ ? काम तो काम होता है, कुछ तो करना पड़ेगा।''[7] फिर दादी बोली कि हमारे खानदान में यह काम किसी ने नहीं किया, तुम जानते हो हम किस खानदान से ताल्लुक रखते हैं। इस पर दादी की बात टालते हुए जहीर ने कहा कि अब यही काम करना पड़ेगा। जहीर ने सिपतुन से पैसे की बात की सिपतुन के पास छिदान भी न था तो उसने हामी कर दी। दूसरे दिन सिपतुन ने अपने जेवर की सन्दूक भी खोली और उसमें से भारी कंगन की जोडी निकाली। जहीर के व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए उसे अपने इन कंगनों को बेचना पड़ा। दुकान का सौदा हो गया मगर सिपतुन की सन्दूकची खाली हो गई। फिलहाल दुकान अच्छी चलने लगी थी, ग्राहक बंधे हुए थे। कुछ दिनों बाद उसे हेल्पर की जरूरत पड़ी क्योंकि सारे ग्राहकों को संभालना अब उसके बस में नहीं रह गया था और व्यवसाय को आगे सुचारू रूप से चलाने के

लिए उसे फिर से समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस प्रकार नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास 'अक्षयवट' में इस प्रकार हो रहे शोषण को उजागर किया है कि कैसे जहीर अपने परिवार का पालन–पोषण करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है चाहे वह काम उसके परिवार वालों की शानौ–शौकत को ठेस पहुँचाता हो। अतः इन समस्याओं का निष्कर्ष यह निकलता है कि आज वर्तमान समाज का प्रत्येक व्यक्ति समस्याओं के कुटिल जाल में फँसा हुआ है। आर्थिक समस्याएँ तत्कालीन युग की समस्याएँ न होकर आधुनिक समाज की भी ज्वलन्त एवम् जागरूक समस्याएँ हैं। इन सब मुख्य आधार है – अर्थ जीवन को चलाए रखने का एक साधन है। पर अर्थ नियामक सत्ता नहीं है। आधुनिक सन्दर्भ में आर्थिक विषमताओं के बढ़ने से व्यक्ति परेशान व बौखलाहट से भर गया है। महंगाई के इस युग में बेरोजगारी की समस्या, अत्यन्त विकट है। न केवल शिक्षित व्यक्ति ही बेरोजगारी से पीड़ित है, अपितु अशिक्षित लोग भी व्यवसाय संबंधी समस्याओं से अत्यन्त दुखी हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सं० श्यामसुन्दर दास, बी०ए० शब्द सागर, प्रथम भाग, काशी नगरी प्रचारिणी सभा, पृ० 320
2. नासिरा शर्मा, अक्षयवट, लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक 702, प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ, 18 इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड़, नयी दिल्ली – 1110003, प्र सं० 2003, पृ० 149
3. वही, पृ० 143
4. वही, पृ० 143
5. वही, पृ० 212
6. वही, पृ० 212
7. वही, पृ० 215